ISSN 2349-638X

REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

MONTHLY PUBLISH JOURNAL

VOL-I | ISSUE-VI | Nov. | 2014

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512
- (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
- editor@aiirjournal.com
- aiirjpramod@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

वैश्वीकरण की अवधारणा

डॉ.शिवकांता रामकिसन सुरकुटे
हरंगुळ (बु) ता.जि.लातूर

वैश्वीकरण या भूमण्डलीकरण यह शब्द उच्चारण के लिए सहज नही है। अंग्रेजी में ग्लोबलाईजेशन शब्द भी आसान नही है किन्तु हमे यह शब्द स्वीकारना होगा चूंकि इसके पीछे एक प्रक्रिया मानी गयी है। भले ही शब्द कठिन और संज्ञान उलझी हो फिर भी हो इससे जुडना ही पडेगा।

वैश्वीकरण यह शब्द थिओडर लेव्होट ने 1985 में प्रथम उपयोग में लाने के बाद यह शब्द एल.पी.जी. उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की यह कल्पना सारे विश्वभर में घटित एक जैसी प्रक्रिया के लिए उपयोग में लाई गई है। ग्लोबलाईजेशन का अर्थ सारे विश्व से जुडी प्रक्रिया होता है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया आर्थिक क्षेत्र में आर्थिक उपयोग में लाई गई है।

वैश्वीक बैंक के अनुसार – ''वैश्वीकरण अर्थात उपभोग्य योग्य वस्तुओं के साथ वस्तुओं पर लगाया गया आयात नियंत्रण धीरे–धीरे नष्ट करना, आयात चुंगी के दर को कम करना''

वैश्वीकरण के कारण उत्पन्न इस खुली अर्थव्यवस्था में पारम्पारिक तथा छोटे व्यवसाय करनेवाले लोग इस बाजारु संस्कृति में टिक नहीं पायेंगे आज भी भारतीय समाज में इन पारम्पारिक व्यवसायों को अपनाकर अपनी जीविका को चलाने वालों का एक बड़ा वर्ग है, जो इस व्यवस्था में बाहर फेका जायेगा। इस व्यवस्था में शासन सामाजिक उत्तरदायित्व को नकार रहा है अर्थात स्वायतता को अर्थिक प्रोत्साहन देकर मुनाफाखोरी बढ़ाई जा रही है। शिक्षा का क्षेत्र, तंत्रज्ञान शिक्षण आदि इसके अधीन हो रहे हैं, मल्टीनेशनल कंपनियों ने निम्नवर्गो के समझे जानेवाले व्यवसाय को हड़प लिया है जैसे–पत्थर की चक्की, पत्थर का कुटना इसकी जगह मिक्सर ने ली तो खेती को लगनेवाले लोटे कि औजार किर्लोस्कर जैसी

कंपनियाँ तैयार कर रही है। खुली अर्थव्यवस्था के कारण विदेष से अनेक यंत्र, वस्तु कपड़े सस्ते दामों पर प्राप्त हो रहे है तो पारम्पारिक तरीके से तैयार वस्तु कौन खरीदेगा या यह उस मंडी में टिक पायेगी ? जहाँ आधुनिक तंत्रज्ञान से बनाई तथा बिना कष्ट के प्रयोग में लायी जानेवाली खूबसूरत वस्तुयें कम दामों में प्राप्त हो रही है, खेती प्रधान भारतीय समाज वैश्वीकरण की इस खुली अर्थव्यवस्था की इस दौड में कहाँ तक दौड़ पायेगा और वैश्वीकरण से भारत को जितने फायदे होंगे।

फायदे :–

1. उत्पादक क्षमता का ठीक इस्तेमाल और बेड़ पैमाने पर उत्पादन होने की संभावना.
2. प्राप्त पूंजी का समान वितरण संभव
3. अर्थव्यवस्था में नये तंत्रज्ञान का समावेश हो सकता है।
4. प्रशासकीय कौशल में सुधार और मजदूरों के दृष्टीकोण में परिवर्तन के आसार संभव
5. विदेशी पूंजी, निर्यात और विश्वासहर्ता अदि में सुधार की संभावना
6. आर्थिक उदारीकरण के कारण उत्पादन की गुणवत्ता बढ़ंगी। अपनी उत्पादित वस्तु अधिक गुणसंपन्न, आकर्षक और कम दाम में बने इसके लिए प्रयत्न शुरु हो जाएंगे। आर्थिक उदारीकरण के कारण ग्राहकों का फायदा ही फायदा हौ।
7. इस नीति के कारण इस देश का विभाग अपने उत्पादित वस्तु को किसी भी देश में बेच सकता है। जहाँ उसको अधिक दाम मिलेंगे वहाँ उसे वह बेच सकेगा इसमें उसकी सरकार असे निर्यात के लिए प्रोत्साहित करेंगी।
8. इस नीति के कारण रोजगार में वृध्दि होगी।
9. इस नीति के कारण विश्व के किसी भी देश में जाकर व्यक्ति अपना व्यवसाय शुरु कर सकेगा। रोजगार के लिए जा सकेगा।
10. इस नीति के कारण विभिन्न धर्मो, संप्रदायों, वंशो, भाषाओं के लोन निकट आते जाएंगे। एक दूसरे के प्रति जो भ्रम है, वे टूटते जाएँगे। विश्व मानव की कामना साकार हो जाएगी।
11. धीरे–धीरे विश्व भर में एक संपर्क भाषा उभरेगी। अर्थात अंग्रेजी को ही यह स्थापन प्राप्त होगा। दूसरी और अपनी वस्तु के प्रचार–प्रसार के लिए संबंधित देष की संपर्क भाषा जिन्हे अपना माल बजार में बेचना हैं उन्हें सीखनी पडेगी।

12. संस्कृतियों का आदान–प्रदान बढ़ते जाएँगे।
13. जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में जबरदस्त ऐसी स्पर्धा शुरु हो जाएगी। ऐसी स्पर्धा के परिणाम स्वरुप प्रत्येक का अपना। अस्तित्व को बनाए रखने के लिए कठोर परिश्रम करने होंगे।

नुकसान :–

1. ऋणखोरी को बढ़ावा मिल सकता है।
2. दूसरों को फसाने की साजिश या फसाने की मनोवृत्ति बढ़ेगी।
3. मौज–मजे, रंगीनवृत्ति को बढ़ाने का खतरा है।
4. विकसित राष्ट्रों को नीति भारत के विकास के लिए पोषक नहीं है।
5. बेरोजगारी बढ़ने की संभावना है।
6. इस नीति का बडा गहरा असर सामाजिक तथा अर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्ग पर अधिक होगा। उत्पादन पर, शिक्षा पर नियंत्रण हट जाने से कमजोर वर्ग और कमजोर होता जाएगा। प्रशासन तथा कल्याणकारी सभी योजनाओं का निजीकरण हो जाने से इस वर्ग का शोषण अधिक होता जाएगा।
7. स्पर्धा के कारण गुणवत्ता बढ़गी, यह जो तर्क दिया जा रहा है, उसके तथ्य नहीं है क्योंकि विज्ञापन के माध्यम से जो अधिक लोगों तक पहुँचेगा, जो अधिक आकर्षक विज्ञापन करेगा, उसी की वस्तु बिकेगी। गुणवत्ता पर कंपनियाँ अधिक खर्च नही करेंगी विज्ञापन पर ते अधिक खर्च करेगी।
8. मानवीय संबंधो पर इसका गहरा असर होगा। परिवारिक जीवन पर, वैवाहिक जीवन पर भी असर होगा धीरे–धीरे पूरा समाज भोग की और आकृष्ट हो जाएगा। 'संपत्ती और भोग' यही दो बातें शेष रह जाएगी। परिणामतः साहित्य स्रजन पर इसका असर होगा।
9. मनुष्य का जीवन घोर आत्मकेन्द्रित हो जाएगा। परिणाम स्वरुप वह समाज, देश, भाषा, संस्कृति आदि के लिए वक्त नहीं दे पाएगा।
10. ग्राहक की निर्णय क्षमता को ही विज्ञापन द्वारा कमजोर या खत्म किया जाएगा। ग्राहक क्या खरीदेगा इसका निर्णय विज्ञापन करेंगे। अत्यत सामान्य वस्तु बेचने का प्रयत्न विज्ञापन करेंगे।
11. जबरदस्त स्पर्धा के कारण मनुष्य का जीवन तनावग्रस्त हो जाएगा। जो स्पर्धा टिक नहीं पाएँगे वे जीने योग्य नही है ऐसी यह नीति अप्रत्यक्ष रुप से स्पष्ट करती है। जो

स्पर्धा में असफल हो जाएँगे उनमें घुटन पैदा होगी, वे अनेक मानसिक बीमारियों से ग्रस्त हो जाएँगे।

12. विविधता इस देश की विशेषता है। बाजारीकरण के कारण विविधता धिरे–धिरे खत्म होती जाएगी। इसका असर सांस्कृतिक जीवन पर भी होगा। स्वदेशीपन खतरे में आ जाएगा। उलटे स्वदेशी की और पिछड़ा हुआ इस रुप में देखा जाएगा।

निष्कर्षतः कहा जाएगा कि

1. वैश्वीकरण की प्रक्रिया में आधुनिकीकरण, प्रौद्योगीकरण, केन्द्रीकरण, महानगरीकरण, निजीकरण के साथ–साथ वैज्ञानिकता, विवेकवाद, उपभोगतावाद अदि चल रहे है।
2. वैश्वीकरण की एक जैसी प्रक्रिया दो स्तरों पर हो रही है। भौतिक और मानसिक जिसका परिणाम भाषा, साहित्य और संस्कृति पर होगा।
3. वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया में हम पाश्चिमात्य भाषा के अधीन न होते हुए अपनी भाषा साहित्य संस्कृति द्वारा अपनी अस्मिता को बचाए रखना होगा। यह कार्य लेखक साहित्यकार ही कर सकता है।

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com